वेदों में यज्ञीय चिकित्सा

डॉ० इन्दिरा जुगरान
एसो०प्रोफेसर–संस्कृत
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ऋषिकेश

वेद मानवता की अनुपम एवं महान निधि हैं। वेद वह विशाल ज्ञान राशि है, जो स्वरुपतः सत्य, सनातन, नित्य एवं अपौरुषेय है। मनु ने 'सर्वज्ञान मयो हिसः' कहकर वेद को समस्त ज्ञान से संवलित बताया है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद ही स्वतः प्रमाण है और दूसरे अन्य ग्रन्थ परतः प्रमाण है।

धर्म जिज्ञास मानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ।। (मनु०)
तद् वचनाद् आम्नायस्य प्रामाण्यम।। (वैशे०)

वेद वर्णित विषयों का वर्गीकरण ऋषियों ने निम्न प्रकार से किया है ऋग्वेद में ज्ञान, यजुर्वेद में कर्म, सामवेद में उपासना और अथर्ववेद में विज्ञान। वेद में प्रत्येक विषय पर सामग्री उपलब्ध हो जाती है। वर्तमान समाज में मनुष्य शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक दुःख से अक्रान्त है। यज्ञ ही ऐसी धार्मिक प्रक्रिया है जिससे मनुष्य को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक सुख मिलता है।

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।[1]

वैदिक यज्ञ उत्तम स्वास्थ्य प्राप्ति का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। प्राचीन काल मे ऋषियों द्वारा समस्त रोग निवारण एवं सफल चिकित्सा के साधनों में यज्ञ भी एक सहायक साधन था। इसीलिए उस समय रोग एवं महामारी फैलने पर बड़े–बड़े यज्ञ सम्पादित किये जाते थे, जिससे प्रजा आरोग्य लाभ करती थी। ये भैषज्य यज्ञ के नाम से जाने जाते हैं। संसार में नये या पुराने जितने धर्म प्रचलित है, उन सब में यज्ञ का कोई न कोई प्रकार अवश्य स्वीकार किया गया है।

'त्र्यम्बकं यज्ञामहे सुग्न्धिं पुष्टि वर्धनम्।'
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।"

अर्थात् सुगन्धि और पुष्टि को बढ़ाने वाली औषधियों से हवन करता हूँ। जिससे मृत्यु के दुःख से उसी प्रकार छूट जाऊँ जिस प्रकार पका हुआ फल अनायास अपने बंधन से छूट जाता है परन्तु मोक्ष से न छूँटू।

इस मन्त्र के जप अनुष्ठान से सभी प्रकार के दुःख, भय, रोग आदि दूर होते हैं। भैषज्य यज्ञों के द्वारा जुकाम, बुखार, दस्त, शरीर पीड़ा इत्यादि मौसमी तथा चेचक हैजा प्लेग आदि प्रचलित बीमारियों का सामूहिक रुप से निवारण किया जाता है।[2]

ऋग्वेद में भी एक मन्त्र में ऋषि ने रोगों को नष्ट करने वाले यज्ञाग्नि का मंत्रो द्वारा गुणगान करने का उपदेश किया है।[3] अन्यत्र मनोयोग पूर्वक देवों के यज्ञादिकर्म सहित यज्ञाग्नि में आहुत औषधीय हविर्युक्त घृत की धारा से वर्ष प्रर्यन्त वृद्धि की कामना की गई है तथा रोगादि से श्रोत, नेत्र, प्राण आदि के छिन्न न होने तथा आयु और तेज से भी छिन्न न होने की कामना की गई है।[4]

ऋग्वेद में एक अन्य स्थल पर ऐसा उल्लेख है कि जो मनुष्य यज्ञाग्नि में विभिन्न रोगनाशक औषधियों की समिधाओं का आधान करता है, वह श्रेष्ठ बल को धारण करता हुआ स्वस्थ रहता है।[5] इस प्रकार इन मन्त्रों से यह स्पष्ट है कि विभिन्न औषधियों, वनस्पतियों के समित पत्र, पुष्प, फल, मूल, निर्यास इत्यादि हवि द्रव्यों से मनुष्य शक्ति, पोषण तथा रोग निरोधक शक्ति प्राप्त कर लेता है तथा सभी प्रकार के रोगों से रहित होकर दीर्घजीव हो सकता है।

अथर्ववेद के भैषज्य सूक्तों में रोगों के निवारण, कृमियों के नाश तथा विभिन्न वृक्षों की उपयोगिता का निरुपण है। इस प्रसंग में अनेक प्रकार के रोगों का निर्देश किया गया है जिनसे तात्कालिक जनता अक्रान्त होती थी। विशेष रुप से तक्मन् (5-22) गण्डमाला (7-74) बलास (क्षय रोग 6-14) यक्ष्मा (1-12, 3-7) श्वेत कुष्ठ (1/23-24) उन्माद इत्यादि रोगों के नाश के लिए यज्ञाग्नि द्वारा सफल चिकित्सा का वर्णन हैः-

अथर्ववेद में यज्ञाग्नि से प्रार्थना करते हुए सोम रस, यज्ञीय दृषद्-उपल, बलदात, सूर्य, यज्ञवेदी, कुश और प्रज्वलित समिधाओं से रुग्ण शरीर में विद्यमान ज्वर-जन्य उपद्रवों को दूर करने की कामना की गई है।[6] आयुवैदीय ग्रन्थ में भी नीम के पत्ते, बच, कूठ, हरड़, सफेद सरसों और गुग्गुल के चूर्ण को घी में मिलाकर उसकी धूम से विषम ज्वर नष्ट करने का विधान है।[7]

सूर्य की रश्मियों के सेवन द्वारा कृमि-जिनके लिए 'रक्षस्', 'यातुधान' पिशाच शब्द आये हैं नष्ट होते हैं। यज्ञ द्वारा अग्नि में कृमि विनाशक औषधियों की आहुति देकर उनके धूम से इन रोग कृमियों को विनष्ट करके रोग से बचा जा सकता है।

अथर्ववेद में गण्डमाला की चिकित्सा का संकेत करते हुए सूर्य और चन्द्रमा की किरणों के सेवन तथा यज्ञाग्नि में आहुति द्वारा इन्हें दूर करने का उल्लेख है। एक मन्त्र में ऐसा उल्लेख है कि सूर्य तुम्हारी (गण्डमाला की) चिकित्सा करे और चन्द्रमा इसे दूर भगा दे।[8]

बलास (क्षय रोग, तपेदिक) को शरीर से बाहर निकालने का उल्लेख अर्थवेवद के सातवें मण्डल के 76वें सूक्त में मिलता है। पुराने से पुराने और नवीन दोनों प्रकार के क्षय रोग की औषधि यज्ञीय हवि है।[9] एक अन्य मन्त्र में ऐसा उल्लेख है कि जिस घर में नित्य हवन किया जाता है वहां क्षय रोग किसी को हानि नहीं पहुँचा सकता।[10]

अग्नि में सात्विक गन्धवाली कपूर, चन्दन तुलसी, इलायची, कपास का बीच, खसखस, वंश–लोचन, काली मिर्च आदि यज्ञ में डालने से उस धूएँ की धूम लेने से उन्मत रोगी के मस्तिष्क के तन्तु विकसित हो जाते हैं और जागृति एवं प्रसाद के कारण वह स्वस्य हो जाता है।

इस प्रकार 'अर्थवेद' में उपलब्ध उल्लेखों से यह स्पष्ट हो जाता है कि रोगों के निदान हेतु यज्ञीय चिकित्सा विज्ञान भी महत्त्वपूर्ण साधन है। सुगन्ध गुण युक्त (कस्तुरी केसरादि) मिष्टगुण युक्त (गुड़ शक्कर आदि) पुष्टि कारक गुण युक्त (घृत, दुग्ध, अन्नादि) रोग नाशक गुण युक्त (सोमलतादि) इन चारों द्रव्यों के परस्पर शोधन, संस्कार और यथायोग्य मिला के अग्नि में युक्ति पूर्वक जो होम किया जाता है वह वायु और वृष्टि जल की शुद्धि करने वाला होता है। तज्जन्य धूम और गैस के माध्यम से रोग कृमियों को विनष्ट किया जा सकता है।

सन्दर्भ :–

1- ऋग्वेद 1-164.35

2- वैदिक सम्पत्ति, पृ० 28

3- ऋग्वेद 1-12-7 कविमग्नि मुपस्तुहि सत्य धर्माण मध्वरे। देवीममीवचातनम्।।

4- अथर्ववेद 19-48-1 घृतस्य जूतिः समना सदेवा संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती।
श्रौत्रं चक्षुः प्राणोऽछिन्नो नो अस्तु अछिन्ना वयमायुषो वर्चसः।।

5- ऋग्वेद 3-10-3

6- अथर्ववेद 5-22-1

7- वृ०नि०र० : निम्ब पत्रं वचा कुष्ठं पथ्या सिद्धार्यकं घृतम्।
विषम ज्वर नाशाय गुग्गुलश्चेति धूपनम्।।